चतुर्थ अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित वर्गसंघर्ष का अध्ययन

चतुर्थ अध्याय

अभिमन्यु अनत के उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित वर्ग संघर्ष का अध्ययन

प्रास्ताविक :

मॉरिशस के औपनिवेशिक काल के अन्तिम शासक अँग्रेजों के शासन–काल में आप्रवासी भारतियों को कुली–मजदूर के रूप में मॉरिशस ले आया गया था । अँग्रजों ने मॉरिशस को जीत लिया था, लेकिन देश में फ्राँसीसियों का प्रभूत्व नहीं मिटा था । उन्हीं फ्राँसीसियों की कोठियों में काम करने के लिए भारतीय मजदूर लाये गये थे । जिन शर्तों और परिस्थितियों में भारतीय मजदुरों को मॉरिशस में जीना पड़ा वे हृदयविदारक हैं । लोगों पर चाबूंकों और बासों की बौछार होती थी । ईख के खेतों में मजदुरों को अपनी कमर सीधी करने की फुरसत तक नहीं थी । आखिर फ्राँसीसियों के अत्याचार से मुक्त होने के लिए मजदुरों ने अपना एक सशक्त संगठन किया और फ्राँसीसियों के अधिपत्य का खातमा किया । मजदुरों ने हिन्दी के बल पर अपना संघर्ष जारी रखते हुए मॉरिशस को स्वतन्त्रता दिलाई । मॉरिशस की स्वतन्त्रता मजदुरों के संघर्ष का ही परिणाम है, जो अत्यंत सराहनीय है ।

अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि आप्रवासी भारतीय मजदुरों ने मॉरिशस को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए क्या–क्या सहा । मॉरिशस को जब स्वतन्त्रता दिलाई तब मजदुरों ने अपने लिए एवं अपनी अगली पीढ़ी के लिए कुछ सपने सजाये थें । वे सपने उनके हक की रक्षा एवं भली जिदगी के थे । किन्तु आज बिल्कुल विपरित परिस्थितियाँ निर्माण हो गयी है । जिनके पूर्वजों ने मॉरिशस की स्वतन्त्रता में अपने प्राण गवाए, उन्हे ही आज पूँजीपति फ्राँसीसियों एवं मिल–मालिकों के षड्यन्त्र का शिकार होना पड़ रहा है, अपने अधिकारों की रक्षा के लिए फिर से संघर्ष करना पड़ रहा है । आज वहाँ की सरकार को ईख खेती के मजदूर के अधिकार, उनकी दयनीय स्थिति से कोई लेना–देना नहीं है । राजनीति आज मजदुर के पक्ष में कम और पूँजीपति फ्राँसीसियों के पक्ष में ज्यादा रस लेती हुई नजर आती है । परिणाम स्वरूप वहाँ की आम जनता को एक तरफ अपने अधिकारों के लिए तो दूसरी ओर वर्ण–भेद की समस्या से ऊपर उठने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है ।

अभिमन्यु अनत ने इसी संघर्ष को अपने उपन्यास – लेखन का उपजीव्य माना । उन्होंने अपने ज्यादातर उपन्यासों में मजदूर–मालिक सम्बन्धों को ,उनके बीच के सामाजिक–आर्थिक भेद–भाव और तज्जन्य संघर्ष को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है । उनके उपन्यास का कुली –मजदूर विविध यातनाओं तथा दण्डों को सहते हुए अपनी मेहनत से , अपने प्रस्वेद बूँदों से मालिकों की तिजोरी को भरता है , किन्तु अपने हक के लिए , अपनी अस्मिता , प्रतिष्ठा एवं अस्तित्व के लिए तथा एक बेहतर समाज के लिए सदैव संघर्ष करता रहता है । लेकिन स्वैराचारी कोठियों के मालिक, मजदुरों को उनके अधिकार न मिले इसलिए कभी सुखारी का बहाना , तो कभी पैदावार की कमी का बहाना बनातें है । अतः स्पष्ट है कि अभिमन्यु अनत के उपन्यास की संघर्ष ही सबसे बड़ी सामाजिक उपलब्धि है ।

प्रस्तुत उपन्यास , ' हड़ताल कल होगी' में भी अभिमन्यु अनत ने संघर्ष की प्रक्रिया को जारी रखा है । वे अपने कर्तव्य के प्रति सजग है । इसी कारण वे अपनी लेखनी द्वारा अपने समाज की शोषित , पीड़ित एवं निर्धन जनता के दुःख–दर्द को , उनके द्वारा किये हुए संघर्ष को वाणी देते हैं । उपन्यासकार मार्क्सवाद से प्रभावित है । अतः वे मार्क्सवाद के मूल सिद्धान्त , 'वर्ग–संघर्ष' पर विश्वास रखते हैं। ' वर्ग–संधर्ष' से तात्पर्य है कि शोषित की शोषक के खिलाफ उठती विद्रोह की आवाज । समाज–विकास के मूल में भी वर्ग–संघर्ष कार्यरत रहता है । समाज के दो वर्गों में संघर्ष तभी उत्पन्न होता है , जब उनके बीच कुछ विसंगतियाँ ,पनपने लगती हैं । परिणाम स्वरूप सशक्त वर्ग दूसरे लाचार वर्ग पर अपना वर्चस्व कायम करने के हेतु अन्याय करने लगता है ।

प्रस्तुत उपन्यास , ' हड़ताल कल होगी ' में जिस वर्ग–संघर्ष का विस्तार से चित्रण है, उसका एकमात्र कारण मॉरिशस–समाज पर पूँजीपति फ्राँसीसी समाज का वर्चस्व है । इनके मॉरिशस समाज पर के वर्चस्व के कारण ही मॉरिशस समाज में आर्थिक , सामाजिक विषमता का बढ़ता हुआ फैलाव दिखाई देता है । अतः मॉरिशस–समाज में एक ओर आर्थिक विषमता के कारण मजदूर और मिल–मालिकों में तनाव उत्पन्न होता है , तो वही दूसरी ओर सामाजिक विषमता के कारण वर्ण–भेद जैसी अमानवीयता का फैलाव होता है । परिणाम स्वरूप इन विपरित परिस्थितियों को मिटाने के लिए एक नई विचारधारा का निर्माण होता है , और फिर पुरानी–नयी विचारधाराओं में अपने–अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष होता है । अतः यहाँ आर्थिक संधर्ष , वर्ण–संघर्ष और इतिहास–प्रागतिकता का संघर्ष आदि को विस्तार से चित्रित किया गया हैं ।

(1) आर्थिक संघर्ष :

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में मॉरिशस–समाज के ईख खेती के मजदुरों का मिल–मालिकों के विरोध में किया हुआ विद्रोह है । अभिमन्यु अनत प्रस्तुत विद्रोह एवं संघर्ष के माध्यम से पाठक को मॉरिशस–समाज में स्थित आर्थिक विषमता और इसके परिणाम स्वरूप मजदुरों की दयनीय स्थिति से अवगत कराने का प्रयत्न करते हैं । मॉरिशस व्दीप में स्थित आर्थिक विषमता के कारण ही एक ओर अमीर अधिक संपन्न होता जा रहा है , वहीं दूसरी ओर गरीब अधिक गरीब होता जा रहा है । उपन्यासकार मॉरिशस–समाज में स्थित अर्थिक विषमता से उत्पन्न विपरित स्थितियों को देखते हुएँ कहते है , " ... ! दाई ओर की ये झोपड़ीयाँ ! ये उन लोगों की दुनिया है जो हमेशा से यहाँ रहकर जूझते रहे । और यह बाई ओर समुद्र की गोद के ये आलिशान कोठियाँ , यह उन लोगों की दुनिया है जो कही और रहते है और यहाँ बस अवकाश के क्षणों में आते हैं। "[1] अभिमन्यु अनत यहाँ यह स्पष्ट करना चाहते है कि डेढ़ सौ साल बाद भी मजदूर की अर्थिक स्थिति में कोई भी सुधार नहीं आया है । आज भी वह झोंपड़ियों में रहकर संघर्ष करता है । उपन्यासकार इसी अर्थिक–विषमता का खातमा करना चाहते हैं । ताकि मजदुरों की अर्थिक स्थिति में सुधार आये , उन्हें भी एक भली जिंदगी मिलें ।

अभिमन्यु अनत मॉरिशस–समाज में स्थित आर्थिक विषमता और उससे उत्पन्न अमानवीयता के व्यवहार को देखना नहीं चाहतें । उनका दृढ़ विश्वास है कि आर्थिक–विषमता का खातमा करने के लिए संघर्ष करना अत्यावश्यक है । परिणाम स्वरूप वे मजदुर–वर्ग के जीवन की सफलता संघर्ष में मानते है । मजदूर वर्ग को तीसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है । अतः इस अमानवीयता को मिटाने के लिए उपन्यासकार ने मजदूर को अपने हक की लड़ाई , अपनी अस्मता , अस्तित्व एवं प्रतिष्ठा हेतु सतत संघर्ष करते दिखाया है ।

मॉरिशस व्दीप की आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः चीनी उद्योग पर अवलंबित है । इस व्दीप में गन्ने की खेती अधिक होती है । यह देश भी अन्य देशों की सहायता से अपनी योजनाओं का नियोजन करता है । मॉरिशस की अर्थ–व्यवस्था पर गोरे फ्रांसीसियों का आधिपत्य है । इससे चीनी उद्योग के मजदुरों को निरंतर शोषण का शिकार होना पड़ता हैं । सरकार की ओर से मजदुरों

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ– 113–114 ।

के लिए कल्याणकारी योजनाएँ बनायी जाती हैं लेकिन कुछ मुनाफाखोर , स्वार्थी पूँजीपति , मिल–मालिक उसे गरीब मजदूर तक पहुँचने से पहले ही अपने कब्जें में ले कर, अपने साम्राज्य को अधिक सम्पन्न बनाते है और मजदूर को अपनी स्थिति से ऊपर उठने पर रोक लगाते है । परिणाम स्वरूप मजदूर वर्ग तबाही की ओर बढ़ता है । उसके पास संघर्ष करने के अलावा कोई मार्ग नहीं बचता । अतः वह संघर्ष करता है ।

(अ) मजदुर संघर्ष : —

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में मॉरिशस समाज के ईख खेती के मजदुरों के संघर्ष के माध्यम से पूँजीपति मिल–मालिकों एवं राजनीतिक लोगों द्वारा किये षड्यंत्र का पदार्फाश किया है । उन्होंने हमेशा से ही मजदुर–वर्ग पर अन्याय किये हैं । चीनी उद्योग क्षेत्र को अपेक्षा से भी अधिक मुनाफा होते हुए भी चीनी–उद्योगपतियों का वर्ग न ही ईख खेती के मजदुरों की तनख्वाह बढाता हैं और न ही उन्हें महँगाई भत्ता देता हैं । बल्कि सभी क्षेत्रों के मजदुरों की तनख्वाह में वृध्दि होती है , महँगाई भत्ते भी दिये जाते हैं । लेकिन चीनी उद्योग क्षेत्र में मजदुरों के साथ न्याय नहीं किया जाता । परिणाम स्वरूप मजदूर संघर्ष करते हैं । मजदूर यह भली–भाँति जानते है कि चीनी उद्योग के पास धन का कोई अभाव नहीं है । विश्वमंड़ी में चीनी के दाम बढ़ने से चीनी उद्योगतियों की आमदनी सात–आठ गुनी अधिक हो चली है । मजदुरों के हक को मिल–मालिक खुशी–खुशी दे सकते है ,इससे इनकी तिजोरियाँ ज्यों की त्यों भरी पड़ी रह सकती है किन्तु मिल–मालिक ऐसा न करते हुए मजदूर के हक को अपनी तिजोरी में डालने की कोशिश करते हैं । क्योंकि उच्च वर्ग की हस्तियाँ का यह मानना है कि अगर मजदुरों को उनके हक दे दिये जाये तो मजदूर की अवस्था में सुधार आयेगा और सुधार आने का मतलब होगा , एक दूसरे सशक्त वर्ग का जन्म । ये उन्हें कभी गवारा नहीं हैं । इसलिए वे रोज नये बहाने बताकर उन मजदुरों का मुँह बंद करने की कोशिश करते है ।

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में ईख खेती के मजदूर मिल–मालिकों के षड़यन्त्र से अच्छी तरह वाकिफ़ हैं । अतः वे अपने हक को प्राप्त करने के लिए अपना एक सशक्त संगठन बनाने का निश्चय करते हैं । यही मिल–मालिकों द्वारा किये षड्यन्त्र के विरोध में मजदुरों द्वारा दिया हुवा मुँहतोड़ जवाब हैं। क्योकि पूँजीपति मिल–मालिकों ने एक ऐसे वर्ग को पैदा किया है , जो हमेशा उनके सामने सर झुकाये उनकी आज्ञा का पालन करें। पर अब वह मजदूर अपना

अधिकार चाहता है । मिल–मालिकों की ऐसी धारणा है कि अगर मजदुरों की माँगें मान ली जाए तो नौकर और मालिक में स्थित अंतर मिट जायेगा और मजदूर मिल के मुनाफे में बराबर के हकदार बन जायेंगे । लेकिन मजदूर अपना हक चाहता है । इसीलिए सभी मजदूर हड़ताल में हिस्सा लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। अमित मजदूर नेता होने के नाते हड़ताल की सफलता के लिए अन्य गावों के मजदुरों को संघटित कर प्रत्येक गाँव के लिए एक–एक प्रतिनिधि का चुनाव करता है । सभी मजदूर–प्रतिनिधियों को मजदुरों में एकता बनाये रखने के लिए कहा जाता हैं । अन्य सभी गॉवोंके मजदुरों को उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्रेरित किया जाता है । किन्तु मिल मालिकों द्वारा मजदूर–युनियन को तोड़ने का प्रयत्न किया जाता है । पूँजीपति मिल–मालिक यही चाहते है कि मजदूर में संगठन न रहे , उनमें कभी सुधार न हो , वे जैसे ड़ेढ सौ वर्ष पूर्व दयनीय लाचार थे वैसे ही वर्तमान में रहे ।

मजदूर वर्ग अपनी लड़ाई को जारी रखते हैं। वे अपनी एकता को बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं । किन्तु मिल–मालिक उनकी एकता को तोड़ने के लिए अनेक साजिशें करते हैं । फिर भी मजदूर प्रतिनिधि इन सभी साजिशे पर नजर रखते हैं और अपनी लड़ाई को सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं । मजदूर नेता मजदुरों को यह समझाने की कोशिश करता है कि, "आज के उखड़े हम फिर नहीं पनप सकते । एक बाढ़ . . . . . बहुत बडी बाढ़ कल हमें डुबा जाने के लिए उठने की कोशिश में है।उसे अभी से ही रोकने की कोशिश नहीं की गई तो फिर देर हो जाएगी और हम बहा–लिए जाएँगें ।"[1] अमित मजदुरों को समझाने की कोशिश करता है कि वह मिल–मालिकों के किसी भी साज़िश का शिकार न बनें । अमित स्वयं एक मजदूर नेता होने के नाते अपने अन्य साथी मजदुरों के हक के लिए निरंतर लड़ता है । वह बार–बार मिल–मालिकों से मिलता है । लेकिन उनसे –उसका एक ही उत्तर प्राप्त होता रहता है । जैसे ' मामले पर विचार किया जा रहा है ' । अमित आखिर एक दिन की सिंडिकेट की मीटिंग के बाद हडताल का प्रस्ताव पारित करता है । अमित उद्योगसंघ को भी मीटिंग का वितरण और हड़ताल की सूचना देकर अपने अन्य साथियों के साथ काम में जूट जाता है । हड़ताल में कुल छत्तीस गाँव शामल होते हैं । अन्य साथियों को ,गाँववालों को भी अपने हक के प्रति सजग किया जाता है ।

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ–91 ।

प्रस्तुत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में एक ओर मजदुरों का संघर्ष है तो वही दूसरी ओर मिल–मालिको द्वारा मजदूर युनियन संघ के विरोध में किए हुए षड्यन्त्र हैं । मिल–मालिक मजदुरों के संघर्ष को कमजोर बनाने के हेतु उन्हें डराते ,धमकाते है , मजदुरों की हड़ताल को गैर–कानूनी करार देते है , किन्तु अमित अपने युनियन के वकिल की सहायता से अपनी हड़ताल को जायज करार देता है । मजदूर प्रतिनिधियों को नौकरी से हटाने की भी धमकियाँ दी जाती हैं।

लेकिन फिर भी सभी मजदूर प्रतिनिधि अपनी हड़ताल और अपने युनियन संघ को महत्व देते हुए अपने–अपने गाँव की खबर रखते हैं , वहाँ रात–भर पहरा देते हैं ताकि मजदूर किसी भी षड्यन्त्र का शिकार न बने । अमित भी जगह–जगह जाकर मजदूर प्रतिनिधियों से कहता है ,"ईख के खेती के मजदूर भोले–भाले होते है । उन्हे फुसलाया जा सकता है , , , , , पर हमे ऐसा नहीं होने देना है । , , , , , , यह अपनी उस शक्ति को बताने की लड़ाई है जिससे हम अपनी संतानों के अधिकारों की रक्षा कर सके ।"[1] अतः सभी मजदूर प्रतिनिधि हड़ताल की सफलता के लिए जी तोड़ मेहनत करते हैं । वे मिल–मालिकों को की हर साजिश का मुकाबला करने की हिम्मत रखते हैं। पूँजीपति वर्ग मजदुरों की लड़ाई को बीच में ही रोक देने की पूरी कोशिश करते हैं । वे मजदुरों को डराते, धमकाते हैं । एक ओर गाँव के हड़ताल आयोजकों पर लाठियाँ बरसायी जाती है, गली की बस्तियों में आग लगा दी जाती हैं । गरीब मजदुरों की झोपड़ियाँ , उनके पाले जानवर जल जाते हैं। तो वही दूसरी ओर मौसूसी कोठी के मजदुरों को हड़ताल में हिस्सा न लेने की चेतावनी दी जाती है। बनारस की कोठी से तीन व्यक्तियों को नौकरी से निकाला भी जाता है । मजदूर नेता इस अन्याय के बारे में कोठी के मालिको से मिलना चाहता है लेकिन वहाँ के पुलिस उसे मिलने नहीं देते । उसे कोठी के मजदुरों से भी मिलने नहीं दिया जाता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में जिस तरह पूँजीपतियों की मजदुरों के विरोध में कि गयी साज़िशें का पदार्फाश किया है उसी तरह ईख खेती के मजदुरों के संघर्ष के माध्यम से राजनीति कितनी मजदुरों के पक्ष में है ओर कितनी ज्यादा पूँजीपति मिल–मालिकों के पक्ष में आदि को भी स्पष्ट किया है। अमित की संघर्ष की लड़ाई को राजनीतिक लोग भी रोकने की पूरी कोशिश करते हैं । मजदूर नेता को मन्त्री द्वारा चेतावनी दि जाती है कि वह हड़ताल रोक दे , वरना गिरफ्तार कर लिये जाओंगे । उसे समझाया जाता है कि वह बड़ी–बड़ी हस्तियों के कार्यों में रोक न लगाये । वे जो

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ–159 ।

कर रहे है वही सहीं है । उपन्यासकर यहाँ यह भी बताना चाहते है कि राजनेता लोगों को सिर्फ चुनाव के दोरान ही गरीब मजदुरों की याद आती है, अन्यथा वह पूँजीपतियों की ही हा में हां मिलाते रहते हैं । उपन्यास में का मन्त्री सत्येन्द्र भी जिस गाँव से चुनाव जीता था उसी गाँव के प्रति अपना कर्तव्य पूर्ण रूप से भूल गया है । वह भी मिल–मालिकों का ही साथ देता है और मजदुरों की हक की माँग करने वाली हड़ताल को रोकने कोशिश करता है। अमित सभी विरोधों के बावजूद भी सभी अन्य साथियों के साथ हड़ताल के दिन तीन टन ईख काटने के बजाय तीन ईख काटकर वही बैढ़ने का फैसला करता है । अन्य सभी मजदुरों को उच्चवर्ग की साज़िशों से सतर्क रहने के लिए कहता है। सभी मजदूर हड़ताल के दिन निश्चित कार्य को करने की ठान लेते हैं । किन्तु मिल–मालिक अपने उद्देश्य को सफल बनाने के लिए अमित को ही अपने रास्ते से हटा देते हैं । इसी कारण कल की हड़ताल हो नहीं पाती । भले ही यहाँ पूँजीपतियों की विजय दिखायी गयी है, किन्तु मजदुरों का संघर्ष आज भी जारी है । उपन्यासकार ने यहाँ हड़ताल का आखिर क्या हुआ ? यह न बताते हुए उपन्यास को चरमसीमा पर रोक दिया है । क्योंकि उपन्यासकार का उद्देश्य मजदूर संघर्ष से समाज को अवगत कराना एवं मजदुरों की अर्थिक स्थिति पर पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करना है ।

उपर्युक्त विवेचन के उपरान्त निष्कर्ष रूप में यह कहाँ जा सकता है कि मजदूर वर्ग एक ऐसा वर्ग है जिसे निरंतर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है । इसका मुख्य कारण मॉरिशस की सामाजिक एवं आर्थिक बाँझ व्यवस्था है । इसी के परिणाम स्वरूप मजदुरों को सिर्फ अधिकारों से ही वंचित नहीं रखा जाता बल्कि उन्हें भीतर से भी मार डाला जाता है । उनके हृदय और उनकी आत्मा की हत्या कर दी जाती है। अतः वे संघर्ष में विश्वास रखतें हैं । प्रस्तुत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में मजदूर–वर्ग की जो लड़ाई दिखायी गयी है, वह लड़ाई आज भी जारी है । यह लड़ाई मजदुरों के अपने एवं अपने बच्चों के हक की रक्षा के लिए कि गयी लड़ाई है। समाज में यह रक्षा बहुत ही कम हुई है । और जब भी हुई, उस वक्त मजदुरों के अधिकार एक भिख क रूप में दिये जाते हैं । ईख यह मॉरिशस देश का धन है लेकिन विड़म्बना इस बात की है कि उसी खेती के मजदुरों को उनके निश्चित अधिकारों से वंचित रखा जाता है । परिणाम स्वरूप वे आज भी वही है जहाँ पच्चीस वर्ष पूर्व में थे । वही दयनीय, लाचार अवस्था में । मजदुरों की लड़ाई इन्सानियत की रक्षा की लड़ाई है किन्तु उनके साथ ही अमानवीयता का व्यवहार किया जाता है ।

उपन्यासकार ने प्रस्तुत उपन्यास में मजदुरों के संघर्ष के माध्यम से पूँजीवादी व्यवस्था पर प्रहार किया है और उनकी शोषक वृत्ति पर अंकुश लगाने के हेतु सतत माँग की है/पर सत्ता की ओर से अपेक्षित नियन्त्रण न होने से शोषितों की संख्या बढ़ती ही जा रही है, तथा असमानता की खाई चौड़ी होती जा रही है । उपन्यासकार आप्रवासी भारतीय समाज को सुखी देखना चाहते हैं । परिणाम स्वरूप वे मॉरिशस–समाज की बाँझ व्यवस्था को मिटाना चाहते हैं । वे एक ऐसी समाज–व्यवस्था का निर्माण करना चाहते हैं , जहाँ मजदुरों को बराबर का हक मिलें । वह जहाँ काम करता है , उस जमीन , उस उद्योग में वह केवल नौकर न रहकर हिस्सेदार भी बने । परिणाम स्वरूप सम्पत्ति से सम्पत्ति बढ़ती हैं । वे इसी कारण सम्पत्ति पर के नाजायज अधिकारों को तोड़कर उसका सही वितरण करना चाहते हैं । वे मॉरिशस–समाज के मजदूर की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए संघर्ष को अत्यावश्यक मानते हैं ।

(2) वर्ण संघर्ष

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' मॉरिशस का अपना सामयिक सत्य है । प्रस्तुत उपन्यास में मॉरिशस–समाज में स्थित वर्ण–भेद की समस्या , काले–गोरे के बीच का भेदभाव , संघर्ष एवं अमानवियता आदि का विस्तार के साथ चित्रण है । उपन्यास की आत्मा ही गोरे–काले , शोषक–शोषित के बीच का संघर्ष है। मॉरिशस–समाज में गोरे फ्रान्सीसियों का अधिपत्य होने की वजह से वे काले–वर्ण के लेागों के साथ अमानवीयता का व्यवहार करते है । वे अपने वर्चस्व को कायम रखने के लिए अपने समाज के गोरे फान्सीसियों को छोड़ अन्य काले वर्ण के लोगों को किसी भी प्रकार की सुविधाएँ देने के पक्ष में नहीं हैं । परिणाम स्वरूप काले–वर्ण के लोग अपने हक की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर फ्रॉन्सीसी सरकार का विरोध करते है ।

अभिमन्यु अनत मॉरिशस समाज में स्थित वर्ण–भेद की समस्या का खातमा करना चाहते है। क्योंकि शुरू से ही गोरे फ्रॉन्सीसियों ने काले–वर्ण के लोगों पर अन्याय किये है। वे कल भी धनी एवं शोषक थे और आज भी । उपन्यासकार मॉरिशस–समाज में व्याप्त सामाजिक विषमता का विरोध कर सभी को जीने के लिए समान अवसर प्राप्त करना चाहते है। इसे ही वे अपना लक्ष्य मानते है ।

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक ऐसे पात्र है जो वर्ण–भेद के शिकार है । जैसे अमित , चित्रकार किशोर, अभिनेता , कलाकार मिशेल । इनमें कुछ ऐसे पात्र है जिन्हें सिर्फ गोरे फ्रान्सीसी

समाज के न होने के कारण सरकारी सुविधाएँ नहीं दी जाती । तो कुछ ऐसे पात्र है जो वर्ण–भेद के कारण अपने प्रेम को ब्याह का रूप नहीं दे सकते । अतः वे अपने हक की प्राप्ति के लिए संघर्ष करते हैं ।

अमित प्रस्तुत उपन्यास का नायक है । उसे भी अपने जीवन में कई बार वर्ण–भेद का शिकार होना पड़ा है। जैसे जब वह रायल कालेज में सिनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा देने आता है, तो उसे ज्ञात होता है कि उसके आस–पास बैढ़े सभी छात्र गोरे फ्रॅान्सीसी समाज के है और इसी कारण उसके द्वारा पूछे गए किसी भी सवाल के जवाब प्राप्त नहीं होते है। तभी अमित अपने आप से ही यही पूछता रह जाता है कि ' यह बहिष्कार क्यों ? धन या रंग के कारण ?'[1] अमित मॉरिशस–समाज में व्याप्त वर्ण–भद काले–गोरे के बीच की खाई मिटाना चाहता है ।

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में काले अमित का गोरी फ्राँसीसी जानीन से प्रेम होता है और वे एक दूसरे से ब्याह कर काले–गोरे का भेद मिटा देना चाहते है। वे मॉरिशस में जो अब तक नहीं हुआ उसे करने के लिए प्रतिबद्ध है । अमित के लिए जानीन वह पुल थी जिसके सहारे वह इतिहास की दरार और खाई को पाटना चाहता है। लेकिन अमित के जीवन की विड़म्बना यह है कि वह जिसे प्यार करता है , उसी के पिता से उसने पहले से ही मजदुरो के लिए लड़ाई छेड़ रखी है । जानीन गोरे फ्राँसीसी उद्योगपति की इकलौती बेटी है । उसके पिता को यह कदापि मंजूर नहीं कि वह किसी काले मजदूर नेता से ब्याह कर अपनी जिंदगी खराब करे । लेकिन दोनों भी अपने प्रेम के खातिर संघर्ष करना नहीं छोड़ते । वे हर अन्याय का मुकाबला करना जानते हैं। दोनों का आपसी प्रेम गहरा है। अतः जानीन–अमित समाज में व्याप्त वर्ण–भेद को मिटाकर एक मिसाल कायम करना चाहते हैं। किन्तु दोनों के घर–परिवारवालों को यह मंजूर नहीं कि दोनों का ब्याह हो । अमित की माँ मॉरिशस–समाज में व्याप्त वर्ण–भेद के इतिहास को देखते हुए अमित को अगाह करते हुए कहती है कि , "तुमने तो इस देश का इतिहास पढ़ा है । , , , , , इतना कुछ होने पर भी तुम इस देश की सबसे असंभव बात के पीछे पड़ गए ? . ... गोरे की लड़की के साथ तुम्हारी दोस्ती शायद हो सके । पर वह तुमसे प्यार भी करे , यह न कभी हुआ है और न कभी होगा " । रही शादी की बात, तुम्हें तुम्हारा पूरा जीवन दे रही हूँ . . . . . .

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 66 ।

कभी आकर बता देना कि किसी गोरे की बेटी किसी दूसरी जाति की बन सकी हो ।"[1] अमित की माँ अमित को उसके संघर्ष की जटिलता को स्पष्ट करती है लेकिन अमित मॉरिशस के इतिहास में जो घटित नहीं हुआ उसे करने का प्रण लिये हुए है । वह जानीन से ब्याह कर हर असंभव को संभव बनाना चाहता है।

एक ओर अमित अपने निश्चय पर अटल है तो वही दूसरी ओर जानीन भी अपने प्रेम पर अटल विश्वास रखते हुए अपने परिवारवालों का विरोध करती है । जानीन के परिवार वाले काले–वर्ण के लोगों से , उनके पूरे समाज से तिरस्कार करते है। उनके साथ अमानवीयता का व्यवहार करते हैं । इसी कारण जानीन के पिता जानीन को बार–बार अपनी शान–शौकत, इज्जत , प्रतिष्ठा याद दिलाकर उसे अपने बराबर वालों में ही उठते–बैठने की सलाह देते हैं । वे हमेशा जानीन से कहते है ,"इस घर की समृद्धि की तुम हकदार हो, लेकिन इसका यह मतलब नहीं हो जाता कि तुम जब चाहों ,जहाँ चाहो ,मेरी प्रतिष्ठा को उछालती फिरों । मैं सभ्य लोगों के बीच उठने–बैठने वाला आदमी हूँ। आज मैं तुम्हे यह दूसरी बार कहने जा रहा हूँ कि हमारे अपने लोगों के बीच सभी लड़के मर नहीं गए , जिनसे तुम दोस्ती कर सकती हो । . . . . . , ... , मैं इस बात के लिए तैयार नहीं हूँ कि मेरी अपनी ही कोठी का मलाबार सरदार मझे तुम्हारे बारे में आकर सुनाए ।"[2] इससे यही स्पष्ट होता है कि जानीन के पिता को सिर्फ अपनी प्रतिष्ठा प्रिय है । जानीन की माँ और दादी भी उसके प्रेम का विरोध करते हैं।

जानीन जब अपनी माँ–से कहती है कि अमित के पास अगर वह सभी कुछ होता जो हमारे पास है तो क्या उस समय तुम उसे हमारे परिवार के योग्य समझती ? तभी उसकी माँ अमित पर व्यंग्य करती हुई कहती है ,'मक्खी हाथ के बराबर हो जाने के बाद भी दूध में गिरकर मक्खी ही रहेगी और उसे उसी तरह निकाल फेंकने में ही बुद्धिमानी है ।'[3] इस व्यंग्य के बाद भी अमित के प्रति जानीन का प्रेम कम नहीं होता ।

जानीन का अमित के प्रति बढ़ते हुए प्रेम को देखकर जानीन के पिता अमित को अगाह करते है, उसे डराते , धमकाते है कि ,'अगर जानीन का पीछा नहीं छोड़ा तो अगवाह कर लीए जाओगे ,मार

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 26, 27 ।

2 वहीं – पृष्ठ – 77 ।

3 वहीं – पृष्ठ – 133 ।

डाले जाओंगे। परिणाम स्वरूप वे अपने गुण्डों द्वारा उसे अगवाह करवाते है और उसे अपने भाई के बंगले पर कैद रखा जाता है। उसे कुछ समझ में न आये इसलिए उसे बेहोश कर उसके ऑखों पर पट्टि बाँधी जाती है ,उसके हाथ–पैर बाँधे जाते है। लेकिन फिर उसे डरा–धमकाकर छोड़ दिया जाता है। दूसरी ओर जानीन ,अमित से ना मिले इसलिए उसके सर के बाल काट दिए जाते है , उसे कमरे में नजरबंद रखा जाता है । फिर भी जानीन अपने प्रेमी अमित से मिलने जाती है और उसे अपने पिता की काली करतूतों के बारे में बताकर अपनी जान की हिफाजत करने की सलाह देती है । जानीन अपने प्यार की दुर्दशा को देखकर बेचैन हो जाती है और यह सोचने पर मजबूर हो जाती है कि "... आखिर क्या कारण है कि इतने लम्बे इतिहास के दौरान रंग–भेद को इस तरह बर–करार रखा गया है ? विश्व–भर के इतिहास और साहित्य में जब प्यार ने किसी दीवार को अपने सामने टिकने नहीं दिया ,तो फिर यह कैसा अपवाद है कि यहाँ की वह दीवार आज भी ज्यों की त्यों है ? तुम तक पहुँचने के लिए अगर मैं इस दीवार को को नहीं फाँद सकी तो . ..उस अपनी लाश पर ढ़ह जाने दूँगी।"[1] अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि अमित–जानीन दोनों अपने प्रेम को संभव बनाना चाहते हैं। लेकिन फ्राँसीसी समाज को यह स्वीकार नहीं । अमित–जानीन सामाजिक सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपनी दृढ़ता , त्याग और विश्वास के बल पर सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन का प्रण लिए हुए संघर्ष की प्रक्रिया जारी रखते हैं। इस संघर्ष की प्रक्रिया को बार–बार नाकाब बनाने के लिए कभी अमित को अगवाह किया जाता है, तो कभी जख्मी किया जाता है। लेकिन अमित का संघर्ष आज भी जारी है। इस संदर्भ में अभिमन्यु अनत का कहना है , "उनके विवाह हो जाने का मतलब होता संघर्षो का अंत । उनका विवाह नहीं हुआ ,अभी होना है और जब तक नहीं होता , संघर्ष जारी रहेगा । . .। जानीन और अमित इस देश में कल भी थे ,आज भी है और अभी कल भी रहेंगे।"[2] अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि दोनों मॉरिशस–समाज में व्याप्त वर्ण–भेद का तीव्र विरोध करते हैं और इस अमानवीयता को मिटाने के लिए संघर्ष में विश्वास रखते है ।

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में सिर्फ अमित ही वर्ण–भेद का शिकार नहीं है तो , उसके कई मित्र भी इस अमानवीयता का शिकार है । जैसे अमित का खास दोस्त किशोर , जो एक अच्छा चित्रकार है । किशोर घर का आटा गीला करके

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी –पृष्ठ 119 ।

2 डॉ. कमलकिशोर गोयनका – अभिमन्यु अनत एक बातचीत –पृष्ठ 93।

पेंटिग्ज का सामान खरीदता है और उसी के सहारे आकर्षक पेंटिग्ज बनाकर उसकी एक प्रदर्शनी लगवाता है । लेकिन उसके जीवन की विडम्बना यह है कि वह गोरे–फ्रॉन्सीसी समाज की तरह गोरे–वर्ण का नहीं है । परिणाम स्वरूप पाँच दिन की प्रदर्शनी में केवल चार चित्र खरीदे जाते है । उन चार चित्रों से प्राप्त सात सौ रूपये उसके जीवन की स्थिति में परिवर्तन नहीं लाते है। किशोर अपनी पेटिग्जस् की सफलता के लिए फ्रॉन्सीसी सरकार से पत्राचार भी करता है । लेकिन फिर एक बार उसे वर्ण–भेद का शिकार होना पड़ता है । फ्रॉन्सीसी सरकार को जब अपने सरकारी कार्यालय की शोभा बढ़ाने के लिए कुछ पेटिग्जस् की जरूरत होती है तो उस वक्त किशोर के पेटिग्जस् नहीं लिए जाते बल्कि एक फ्रॉन्सीसी कलाकार के पेटिग्जस् इतने आकर्षक न होते हुए भी पच्चीस हजार रूपये में खरीदे जाते हैं । यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि फ्रॉन्सीसी सरकार अपने लोगों को छोड़कर अन्य समाज के लोगों के आर्थिक जीवन में किसी भी प्रकार के परिवर्तन के लिए सहायता नहीं करना चाहती हैं । सरकारी कार्यालय किशोर की पेटिग्जस् को स्वीकार नहीं करता किन्तु फ्रेन्च पत्रों में किशोर की प्रदर्शनी की लम्बे–चौड़े वाक्यों में सराहना कि जाती है । लेकिन उसकी पेटिग्गस् के साथ न्याय नहीं किया जाता है ।

किशोर अपने पर हुए अन्याय का विरोध अपनी पेंटिग्जस् के माध्यमसे करता है । किन्तु इस विद्रोह को कोई समझ नहीं पाता है । अतः अमित उससे कहता है ,"इस तरह अपने को आटे की लोई मान लेने के बदले तुम आवाज तो उठाओं। कई बार कलाकार को जनता के सामने चिल्लाकर अपनी कला समझानी पड़ती है ।"[1] अमित कला–पारखी न होने के कारण उसके विद्रोह को समझ नहीं पाता । क्योंकि किशोर का विद्रोह अमित की तरह शारीरिक नहीं है । उसे समझने के लिए एक कलाकार का होना अत्याश्यक है । अतः किशोर ,अमित से कहता है ,"मैं मजदुरों का नेता नहीं हूँ अमित ! मेरा विद्रोह शारीरिक नहीं हो सकता । अगर मेरे चित्रों में तुम्हे विद्रोह नहीं दिखाई पड़ता तो फिर समझ लो कि सचमुच ही उन चित्रों का कोई मोल नहीं ।"[2] अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि किशोर भी एक विद्रोही नवयुवक है । वह अपनी पेटिग्गस् के द्वारा विद्रोह कर अपने हक को पाना चाहता है। अभिमन्यु अनत किशोर की पेटिग्गस् के बारे में कहते है कि ,"किशोर के लिए चित्रकारी संवाद थी । वह चाहता था कि अपने पेटिग्गस के माध्यम

---

1 अभिमन्यु अनत –हड़ताल कल होगी– पृष्ठ–106।

2 वहीं – पृष्ठ–106 ।

से वह दर्शकों से बाते कर सके । उसके सभी चित्र चिल्ला–चिल्लाकर लोगों से बातें करना चाहते थे,पर सारा कुछ मोनोलॉग बनकर रह गया था ।"[1] अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि किशोर दर्शकों से संवाद करना चाहता है , कुछ सवाल पूछना चाहता है । किन्तु उसके द्वारा पूछे गये सवालों का उसे कोई जवाब प्राप्त नहीं होता। आखिर उसे ही उसके जवाब स्वयं को ही देने पडते है। किशोर गोरे वर्ण से वंचित होने के कारण उसकी कला अर्थ–हीन रह जाती है । उसके संघर्ष को कोई समझ नहीं पाता । लेकिन वास्तविकता तो यह है कि उसके सभी चित्र उसके जीवन के संघर्ष के साथ जुड़े हुए है । उसका एक–एक चित्र उसके अपने जीवन के दण्ड और यंत्रणाओं के गवाह है ।

किशोर अपनी पेट्रिग्स् को न्याय दिलाने के लिए ,मॉरिशस –समाज में व्याप्त वर्ण–भेद को मिटाने के लिए संघर्ष करता है लेकिन उसमें उसे अपेक्षित सफलता हासिल नहीं होती । अतः किशोर अपने जीवन से ही इस्तीफा लेने का फैसला करता है । वह इस घटना प्रसंग का चित्र भी बनता है। किशोर वर्ण–भेद के कारण ही अपने जीवन में अपेक्षित सफलता हासिल नहीं कर सकता है । आखिर वह स्वयं को एक असफल कृति की संज्ञा देता है। परिणाम स्वरूप वह आत्महत्या करने का फैसला करता है । वर्ण–भेद का शिकार होने के कारण उसके जीवन में कोई रंग नहीं रहते । अतः वह नींद की गोलियाँ खाकर अपने जीवन का अंत करता है । यहाँ भले ही किशोर का अंत हो गया हो लेकिन उसके चित्र चुप नहीं रहते । इसी संदर्भ में अभिमन्यु अनत का कहना है, "वे सभी किशोर की कृतियाँ थी , कृतियाँ उसके जीवन काल मे मौन रही पर अब चिल्ला रही थी । चिल्लाकर किशोर के अस्तित्व का बोध करा रही थी । एक–एक चित्र की रेखाएँ कृतज्ञता लिए हुई थीं । अपने अपने श्रेष्ठों के प्रति कृतज्ञता । एक बीत चुकी अवधि के साक्षी के रूप में वे तस्वीरे अपनी गवाही देना चाह रही थीं । उन चित्रों में किशोर था । उन चित्रों में सच्चाई थी ।"[2] अतः यहाँ अभिमन्यु अनत किशोर के माध्यम से वर्ण–भेद के शिकार एक चित्रकार की शोकात्म कथा सुनाते है । साथ ही एक चित्रकार के द्वारा किये संघर्ष के एक रूप को भी दिखाने का प्रयत्न करते है ।

---

1 अभिमन्यु अनत –हड़ताल कल होगी– पृष्ठ–107।

2 अभिमन्यु अनत –हड़ताल कल होगी– पृष्ठ–149।

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में मॉरिशस समाज में स्थित वर्ण–भेद की समस्या एवं गोरे फ्रॉन्सीसियों द्वारा श्वेत–वर्णीय लोगों पर किये अन्याय , अत्याचार की जटिलता को स्पष्ट करने के लिए मिशेल नामक पात्र को भी लिया गया है । यह पात्र भी उसी वर्ण–भेद प्रवृत्ति का शिकार है , जिसके शिकार अमित एवं किशोर है । अन्य पात्रों की तरह मिशेल को भी सरकारी सुविधाएँ इसलिए नहीं दि जाती क्योंकि वह गोरे–वर्ण का नहीं है । मिशेल ने युवा मंत्रालय की ओर से आयोजित नाट्य–प्रतियोगिता में तीन बार लगातार प्रथम अभिनता के रूप में आया है । उसका फ्रेन्च का उच्चारण तो अद्वितीय है । लेकिन जब फ्रान्स सरकार की ओर से छात्रवृत्ति प्राप्त होने की बात हुई तो सभी मिशेल को ही योग्य समझते है , परंतु उसे यह छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं होती। क्योंकि जिसे इस छात्रवृत्ति के लिए उचित ठहराया गया था , वह गोरे–वर्ण का है जब कि मिशेल अपनी सभी प्रतिभाओं के बावजूद क्रिओल है । इसी कारण वह अपना क्षेत्र ही बदल देता है। वह हॉकर्ज युनियन का मन्त्री बनता है । वह अमित की तरह अपनी युनियन की माँगों को मेरीन आथोरिटी के सामने रखता है । वह भी अपनी माँगों को पूरा करने का साधन ' हड़ताल ' मानता है । अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है मिशेल अपना पूर्व रंगमंच का क्षेत्र बदल कर अन्य क्षेत्र में जाकर मॉरिशस– समाज में स्थित फ्राँसीसी सत्ता का विरोध करना चाहता है ।

प्रस्तुत कृति ' हड़ताल कल होगी ' में नौकर वर्ग भी है जो वर्ण –भेद से पीड़ित है । जिसे फ्रॉन्सीसी समाज ने अपने समाज से बहिष्कृत किया है । फ्रॉन्सीसी वर्ग नौकर–वर्ग को अपना गुलाम मानते हैं । उनके साथ हमेशा से ही दुर्व्यवहार किया जाता है , कठोरता से पेश आया जाता है । जानीन का परिवार एक गोरे फ्रॉन्सीसी का परिवार है । अतः उसके घर के सभी नौकर वे ही लोग है जो काले–वर्ण के है । सिर्फ जानीन को छोड़कर अन्य किसी ने भी घर के नौकरों को मानव नहीं समझा है । जानीन के कालेज में जो नौकर और माली है वे सभी काले–वर्ण के है । उन्हें छोड़ अन्य सभी गोरे वर्ण के है । अतः अभिमन्यु अनत यहाँ जानीन के कालेज के माहौल को देखते हुए व्यंग्य रूप में कहते है ;"— वह केवल उसके कालेज की दीवारें थी , बाग के फूल थे जो एक से अधिक रंग के थे । रंग की यह विविधता वहाँ के अध्यापक और विद्यार्थी के बीच नहीं थी । वे सभी एक रंग के थे , एक रंग विशेष के थे । आदमियों में दूसरे रंग के अगर कोई थे तो या तो वे तीनों चपरासी थे , या वे दोनों माली ।"[1] अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 37 ।

काले–वर्ण के लोगों को पढ़ने का अधिकार नहीं था । यहाँ के काले–वर्ण के नौकर सिर्फ सेवा करना और गोरे समाज द्वारा अपमानित होना ही जानते है । इसी वर्ण–भेद के कारण वहाँ के युवक मालियों का मजाक उड़ाते है । एक बार ऐसे ही वहाँ के अधेड़ धोती पहने माली की धोती को पिछे से कुछ युवक खिंचते हैं और उसके पीठ पर यह लिखकर गत्ते का टुकड़ा चिपका दिया जाता है कि, 'लंगोटी पहने हिंदू गॅवार , रंग होवे मसूर की दाल ' [1] साथ ही उसके चेहरे को खड़ी के आटे से पोत दिया जाता है। इस दृश्य को देखकर जानीन बेचैन हो जाती है और इस सोच में पड़ जाती है कि वह माली अगर गोरा होता तो क्या उसके साथ उस तरह का व्यवहार किया जाता ? अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है काले–वर्ण के लोगों को फ्रॅान्सीसी समाज ने किस तरह अपनी मुठ्ठी में कसकर रखा है ताकि वे कभी उनके खिलाफ विद्रोह ही न करे ।

प्रस्तुत उपन्यास में नौकर–वर्ग के अंतर्गत अपाया नामक एक पात्र है जो जानीन के घर का लाचार नौकर है । जिसके साथ अन्य नौकरों की तरह ही जानवारों जैसा सुलूक किया जाता है। उसे भी जानीन के पिता इन्सान न समझते हुए अपना गुलाम ही समझते है । अपाया जब अपने पांव में सफेद जूते पहनकर काम पर आता है तो उसके मालिक को यह कदापि पसंद नहीं आता । उसके मालिक का कहना है कि काले–वर्ण के लोगों को सफेद जूते पहनने का कोई अधिकार नहीं है। वह अधिकार सिर्फ गोरे–वर्ण के फ्रॅान्सीसी समाज को है । जानीन के पिता कैनवस के जिन , संफेद जूतों को पहनकर टेनिस खेलने जाते है , वे एक सौ पचहत्तर रूपये के है । वे खेल–कूद के सामान वाली विशेष दूकान से खरीदे है । अतः उन्हें यह स्वीकार नहीं कि उनका नौकर सफेद जूते पहन उनकी बराबरी करे । वे उसे उन जूतो पर काला शू–पालिश लगाने के लिए कहते है । अतः यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि गोरे फ्रॉंसीसी समाज को यह स्वीकार नही कि काले–वर्ण के लोगो की जीवन–पद्धति उनकी जैसी हो । वे हमेशा के लिए उन्हें अपना गुलाम बनना चाहते हैं । जानीन के घर में अन्य बूढ़े नौकर भी है । बुजुर्ग होने के बावजूद भी उनके साथ अमानवीयता का व्यवहार किया जाता है । जैसे , ईख की अच्छी फसल की वजह से कोठी की आमदनी दुगनी हो जाती है । चीनी उद्योगपतियों को अपेक्षित मुनाफे से ज्यादा मुनाफा होता है । इसी खुशी में जानीन के घर में बड़े–बड़े अमीर कोठीवालों को , मिल–मालिकों को दावत पर बुलाया जाता है । इसी पार्टी में एक बूढ़े नौकर के हाथ से गिलास का ट्रे छूट जाता है ।

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 38।

नौकर के हाथ से गिलास के टुकड़े उठाते हुए खून आ जाता है लेकिन फिर भी जानीन के पिता उस नौकर पर गुस्से से बरसते है , उसे अपनी औकात याद दिलाते है ।

जगलाल नामक नौकर जानीन के समुद्र किनारे के बँगले का रखवाला है । वह वहाँ रसोइया, का भी काम करता है । लेकिन उसे भी काले–वर्ण के हाने के कारण एक बार एक दक्षिण अफ्रिकन गोरे सैलानी के रूपये चुराने के इलजाम में दोषी ठहराया जाता है ।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत वर्ण–भेद से पीड़ित पात्रों के माध्यम से मॉरिशस–समाज में व्याप्त वर्ण–भेद की समस्या , गोरे–फ्रॉन्सीसियों का समाज पर का आधिपत्य , उनका आतंक , उनके द्वारा काले–वर्ण के लोगों पर किये अन्याय–अत्याचार , उनकी पाशवीक प्रवृत्ति आदि से पाठक को अवगत कराना चाहते है। अभिमन्यु अनत मॉरिशस समाज में व्याप्त वर्ण–भेद को देखना नहीं चाहते । परिणाम स्वरूप वे अपने द्वारा किये वर्ण–भेद के विरोध को अपने पात्रों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं । वे प्रस्तुत कृति के माध्यम से समाज में व्याप्त अमानवीयता को मिटाकर मानवता लाना चाहते हैं । वे ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते है जहाँ किसी भी प्रकार का भेद–भाव न हो । जहाँ सभी को जीने के समान अवसर प्राप्त हो । अभिमन्यु अनत आशावादी है , इसी कारण वे अपना सघर्ष एवं विद्रोह को अपनी कृतियों के माध्यम से जारी रखना चाहते है ।

वे प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से मॉरिशस के इतिहास में परिवर्तन लाना चाहते हैं । वे वर्ण–भेद को मिटाकर नया इतिहास लिखना चाहते है ताकि फिर कभी कोई वर्ण–भेद का शिकार ना हो । इसी में वे अपने जीवन की सार्थकता मानते है ।

(3) इतिहास और प्रागतिकता का संघर्ष

प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' मॉरिशस का अपना सामयिक सत्य है । प्रस्तुत उपन्यास में मॉरिशस के वर्ण–भेद के इतिहास में और उसी में परिवर्तन करने की चाह रखने वाले नयी पीढ़ी के लोगों में वैचारिक संघर्ष दिखाया गया है । प्रस्तुत उपन्यास में एक ओर मॉरिशस का इतिहास कहता है कि मॉरिशस में वर्ण–भेद के चलते काले–गोरे का मिलन संभव नहीं । किन्तु वहीं दूसरी ओर आधुनिक युग के पात्र है जो आधुनिक विचारों से प्रभावित है , वे मॉरिशस–समाज में व्याप्त वर्ण–भेद को मिटाकर काले–गोरे का मिलन करना चाहते हैं । ' हड़ताल कल होगी ' उपन्यास में मॉरिशस की पुरानी पीढ़ी मॉरिशस के इतिहास में परिवर्तन नहीं चाहती , किन्तु मॉरिशस

की नयी पीढ़ी नये विचारों का स्वीकार कर वर्ण–भेद को मिटाना चाहती है । परिणाम स्वरूप नयी–पुरानी पीढ़ी में मॉरिशस के वर्ण–भेद के इतिहास को लेकर वैचारिक संघर्ष होता है । अर्थात इतिहास और प्रागतिकता में संघर्ष होता है।

अभिमन्यु अनत मॉरिशस की आजादी के बाद भी मॉरिशस–समाज में व्याप्त वर्ण–भेद को मिटाना चाहते है । मॉरिशस के इतिहास में जो अब तक घटित नहीं हुआ उसे करते हुए काले–गोरे का मिलन करवाना चाहते है । परिणाम स्वरूप वे अपने उपन्यास ,' हड़ताल कल होगी ' के द्वारा मॉरिशस के इतिहास को परिवर्तित करने के लिए योग्य पृष्ठभूमि बनाते है । साथ ही नवयुवकों को मॉरिशस–समाज में व्याप्त वर्ण–भेद को मिटाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास के नायक (अमित) नायिका (जानीन) मॉरिशस के इतिहास को बदलना चाहते है। वे मॉरिशस–समाज में जो अब तक नहीं हुआ उसे करने के लिए कटिबद्ध है । अमित–जानीन आधुनिक युग के पात्र है , अतः वे नये विचारों से प्रभावित होकर ब्याह में बँधना चाहते है , भले ही आपस में वर्ण की भिन्नता हो । वे समाज में व्याप्त वर्ण–भेद का विरोध करते हुए काले–गोरे का मिलन चाहते हैं । दोनो अपने परिवार वालों का इसलिए विरोध है क्यों कि वे मॉरिशस के इतिहास में परिवर्तन नहीं चाहते हैं । अमित–जानीन अपने आपसी प्रेम को ब्याह का रूप देना चाहते है । इसके लिए वे संघर्ष भी करते हैं । लेकिन इनके परिवार वाले हर वह कोशिश करते है , जिससे दोनों का संघर्ष कमजोर बने । वे बार–बार मॉरिशस का इतिहास दोहराते है, ताकि दोनों का प्रण विचलित हो , दोनों भयभीत हो ।

प्रस्तुत उपन्यास का नायक स्वयं हिन्दू होते हुए एक गोरी फ्रॉन्सीसी लड़की से ब्याह कर , मॉरिशस–सामज में व्याप्त वर्ण–भेद को मिटाकर काले–गोरे का मिलन चाहता है । मॉरिशस के इतिहास में जिस कार्य को कभी न किया गया , उसे वह करना चाहता है । अमित के इस निर्णय से उसके परिवार वाले चिंतित है । वे हमेंशा उसे मॉरिशस का इतिहास याद दिलाकर उसके संघर्ष को कमजोर बनाने का प्रयत्न करते है । अमित एक ओर पुरानी पीढ़ी के विचारों का विरोध करता है तो वही दूसरी ओर पुरानी पीढ़ी के लोग अमित का विरोध करते है । अमित की माँ पूराने खयालों की है। वह मॉरिशस में व्याप्त वर्ण–भेद को देखते हुए अमित से कहती है ,'' तुम सचमुच ही पागल हो . . . . . । . . . . । . . . तुमन तो इस देश का इतिहास भी पढ़ा है । मुझसे कहते हो कि तुम इस देश का सही इतिहास लिख भी रहे हो । इतना कुछ होने पर भी तुम इस देश की सबसे असंभव बात के पीछे पड़ गए ? —— , लेकिन एक ही बात है जो इस देश में न

कभी हुई है . . . . . और न कभी होगी । गोरे की लड़की के साथ तुम्हारी दोस्ती शायद हो सके ! पर वह तुमसे प्यार भी करें , यह न कभी , हुआ है और न कभी होगा ।"[1] अतः यहाँ स्पष्ट है कि दो पीढ़ीयों के विचारों में मॉरिशस के इतिहास को लेकर वैचारिक संघर्ष है । इसी संघर्ष के आधार पर उपन्यासकार मॉरिशस समाज में परिवर्तन लाना चाहते हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास की नायिका जानीन हैं। जो एक गोरे फ्रॉन्सीसी उद्योगपति की इकलौती बेटी है । जानीन भी अमित की तरह नवीन विचारों से प्रभावित है। वह जाति से अधिक महत्व मानवता को देती है। उसने हमेशा से ही वर्ण–भेद का विरोध किया है । जानीन के परिवार वालों को उसका काले– वर्ण के लोगों के साथ मिलना–जुलना पसंद नहीं हैं । लेकिन वह अमित को बेहद चाहती है । जानीन के परिवारवाले उसे हमेंशा से ही मॉरिशस के इतिहास के बारे में बताते आये हैं । किन्तु जानीन उस इतिहास को ही परिवर्तित करने का निश्चय करती है । अतः स्पष्ट है अमित की तरह जानीन के घर में भी वर्ण–भेद को लेकर इतिहास और प्रागतिकता में संघर्ष है । जानीन के घर के बुजुर्ग लोग मॉरिशस के इतिहास को परिवर्तित होता देखना नहीं चाहते । इसी कारण वे जानीन के निर्णय का विरोध करते हैं। इसी संदर्भ में जानीन और उसकी माँ में हुई प्रस्तुत बातचीत महत्वपूर्ण है ।

जानीन – "—" मैं अमित को प्यार करती हूँ और मुझे कोई नहीं रोक सकता ।

माँ – 'तुम्हे केवल वही मिला था ?

जानीन – '—— ! . . . . उसमें क्या कमी देख ली है तुम लागों ने ? "

माँ – " —— ? "

जानीन – " —— . . . . . ।

माँ – 'जो उस देश में कभी नहीं हुआ , उसे तुम क्यों करना चाहती हो ? "

जानीन – यही तो मैं तुमसे पूछना चाहती हूँ माँ कि इस देश में आज तक ऐसा क्यों नहीं हुआ ? क्या वजह है इसकी ? किसने किसको अपने योग्य नहीं समझा ? किसने किससे धृणा की है और क्यों ? "[2]

---

1 अभिमन्यु अनत – हड़ताल कल होगी – पृष्ठ – 26, 27 ।
2 वहीं – पृष्ठ – 134–135 ।

यहाँ सपष्ट है कि जानीन की माँ जानीन को इतिहास विरोधी कृत्य करने से रोकती है । लेकिन जानीन अपनी माँ से ही उसका कारण पूछती है कि आखिर अब तक मॉरिशस–समाज में काले–गोरे का मिलन क्यों नहीं हुआ ? इसी सामाजिक मिलन के लिए वह अपने समाज से टक्कर लेती है ।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत 'हड़ताल कल होगी ' के माध्यम से दो पीढ़ीयों में ,दो परस्पर विरोधी विचारों में और अतीत–वर्तमान में संघर्ष दिखाना चाहते है । वे प्रस्तुत संघर्ष को दिखाकर मॉरिशस के सामायिक सत्य को परिवर्तित करना चाहते हैं । उपन्यासकार काले–गोरे के बीच की अमानवीयता को मिटाकर मॉरिशस–समाज के वर्तमान को नई दिशा देना चाहते है । उपन्यास में चित्रित पूरातन और वर्तमान का संघर्ष कल भी था , आज भी है और जब तक मॉरिशस–समाज में वर्ण–भेद रहेगा तब तक यह संघर्ष चलता रहेगा। अभिमन्यु अनत इस संघर्ष के माध्यम से ही मॉरिशस का नया इतिहास लिखना चाहते है । अतः स्पष्ट है कि अभिमन्यु अनत ने प्रस्तुत उपन्यास ' हड़ताल कल होगी ' में मॉरिशस के सामयिक सत्य को बड़ी खूबी से अभिव्यक्त कर ,मॉरिशस के इतिहास और वर्तमान नवीन विचारधाराओं में संघर्ष दिखाया है ।

निष्कर्ष

' हड़ताल कल होगी ' उपन्यास के लेखन ओर विचार में वर्ग संघर्ष का विचार सूत्र एवं नींव का काम करता है । अभिमन्यु अनत ने ' हड़ताल कल होगी ' में तीन तरह के संघर्षों का चित्रण किया है । जैसे आर्थिक संघर्ष , वर्ण संघर्ष ,इतिहास और प्रागतिकता का संघर्ष । अभिमन्यु अनत के विचारों से देखा जाए तो वे मार्क्सवाद और गांन्धीवाद दोनों धाराओं के प्रभाव से लिखते नजर आते है । वर्तमान समाज जिस निर्ममता से विषमता निर्माण करता है ,उसे दूर करने के लिए गांधीवादी विचार या मार्ग , उपन्यासकार को इसलिए समीचीन नहीं लगते क्योंकि समाज इतना उदार नहीं रहा है । अभिमन्यु अनत परिवर्तन के लिए क्रांतिकारी उपायों के समर्थक है किन्तु समाज की पुर्नरचना के लिए वे गांधीवादी मार्गों (हृदय परिवर्तन , अहिंसा , शांति , सद्भाव) के हिमायती है।

' हड़ताल कल होगी ' में अभिमन्यु अनत ने आर्थिक , सामाजिक , वर्ण एवं वर्ग विषयक संघर्ष को विस्तार से चित्रित कर संघर्ष के प्रति अपनी आस्था एवं विश्वास को अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत उपन्यास में वर्णित वर्ग संघर्ष अत्यंत मौलिक है , क्योंकि अभिमन्यु अनत इसी के आधार पर पूँजीपतियों का शिकार बने मजदुरों को उनके हक देना चाहता है । प्रस्तुत रचना का उद्देश्य या मूल संघर्ष हड़ताल करना नहीं है बल्कि मजदुरों को दी गई तीसरे दर्जे की नागरिक की संज्ञा को बदलकर उन्हें मिल में हिस्सेदारी दिलाना है । यहाँ उपन्यासकार मानव–समाज के लिए एक बेहतर जिन्दगी की माँग करते नजर आते हैं ।

प्रस्तुत उपन्यास में अभिमन्यु अनत मॉरिशस समाज में व्याप्त वर्ण–भेद से अत्यंत चिंतित एवं व्याकुल नजर आते है । उपन्यास में अमित–जानीन का वर्ण–भेद को लेकर जो संघर्ष दिखाया गया है , वह वर्तमान में भी कायम है । इससे स्पष्ट हो जाता है कि अभिमन्यु अनत आशावादी है । वे नई–पुरानी पीढ़ियों के बीच वर्ण–भेद को लेकर वैचारिक संघर्ष दिखाकर , मॉरिशस के इतिहास को परिवर्तित करना चाहते हैं।

अतः निष्कर्ष रूप कहा जा सकता है कि अभिमन्यु अनत मॉरिशस में रह रहे आनिवासी भारतियों द्वारा उन पर हुए अन्याय के प्रतिकार स्वरूप किए गए विद्रोह , संघर्ष को अपने उपन्यासों का मुख्य आधार मानते हैं ।